

DPN 5650

Title : पुरुषदान विधि PURUṢA DĀNA

Run. No. 6341

Cat. No.

Micro. No.

Subject Ritual 187

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 14 x 6

Folios 20

Lines (in a page) 6/7

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuja. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaṣaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

स्मृति Remark

युक्त) तुलापुष्प दान सम्बन्धी कर्मकाण्ड विधि,
this codex contains ritual process
of offering Tula puruṣa dāna.

centimeter 5

10

15

20

15

0

5

0

centimeter 5

10

15

20

मानति ॥ ॥ यक्षसूत
 समलुप्यमं वं न क
 याति ॥ ॥ इन्द्रो ह
 मेति ॥ ॥

ॐ नित्यं दिव्यं नयां
 वैधयं तमलुप्यमं ॥
 इन्द्रो ह वावल
 गरुन ॥

पूतयज्ञवादिपूष्यम
 लीवन्धयेत् ॥ इन्द्रो
 तेलय्यी ॥

मलुप्युतिक्षीकृम्यात्
 इन्द्रो ह मायाना

अग्निद्विपायुमक
 स्वत्वा ॥ समार्द्धन ॥

अर्ध्यात् तममयलि
 मयूक ॥ इन्द्रो ह नम

इन्द्रो ह नम ॥ इन्द्रो ह
 धवायनमं ॥ चन्द्रो ह

दि ॥ ॥ इन्द्रो ह यज्ञान
 ति ॥ ॥ इन्द्रो ह विष्णु ॥

इन्द्रो ह मम वायव
 अर्ध्यात्

तममयलिगं वधुत्वा
 तल्यात् तममरुमं निध

समाहर्तुं युक्तं नदकि

न्या विना मलुयगुमि

समाहर्तुं यत् ॥ ध्योः

भक्ति ॥ ॥ अर्धयागुली

खनहाय ॥

गुरु अर्धयागु ॥

मयलिंग निवसकि

कल सयाद्वन न ॥

॥ समस्त कनसं

दूत ॥ ॐ मम

ग ॥ ॐ नि ॥ ॐ मिता

मिने ॥ ॐ यकेनय ॥

कनसपूजा ॥

ॐ आ डि ध्रु

निवसकि कलस

पूजा ॥

ॐ नमः॥ धनं नित्यं उ॥ धी॥
रं गंगा जगत्पुरुः नरव
प्रतप नरु न रं लोक क
यमः ॥ यद मास्य न जी
वति॥

याम्या द्वा र्त्र विष्णु र्त्र न मि
तं धन लग्न पु र्क वृ द्वा
धियु र्क पु र्था द्या ना व
की र्ण विरु ग ग धन व
मू र्क्ति ता भव सान् ।
सि द्धानां मान र्ग र्ग
विवृ ध मु नि व र्त्र ४
भव ना नि वि न र्म पा
या र्क र्त्त वे वि द्वा द रि
म न र्ग ल र्द या र्क्त्त का
ना दि जा म ॥ अ धा सि
सर्व दे व ना ॥ म ॥
महा का र्थ मह

ॐ नमः ॥ कृतार्कमहि
मूर्तं नीलाम्बुद
समयुतं। कालदं
धनं देवं यमनाडा
विविक्तं यं ध्यानयु
ष्यं नमः ॥ यमायम्बे
भक्तिमहिताय नमः ॥
यमनदेवं ॥ चन्दन
धूपं दियं नैव द्युयति
था। मनोऽति ॥ सुगु
दक्षिणद्वानमात्रक
सिक्तं वैवस्वतं यम
मः ॥ नमामिस्तुतं

मूर्ध्नाय रक्तकर्मसमा
कथं ॥ दक्षिणद्वान
यनमः ॥ ॥ मूर्ध्नाय
याम्बाद्वानं विष्णुं
त्यादि
महाकार्यमहावीर्य
मिनाऽनं समयुतं
याम्बाद्वानं मिनाऽनं
लं नमामि गन्धमा
दनं ॥ अङ्गुगधुदि ॥

मीलनीचदनीलार्
संनिगां गतं यमं।
कोलदेधुधनं आयं
दत्तं आयतलोचनं।
निजं क्वा विनाज
नं वामां क्वा स्मिता
सदा दक्षिणं
धियं निष्ठां ॥ आनं मुं
जयमातुं ॥
गीमा गीमस्वनूर्यं
विकृति सुकृतिनां
धर्मता धर्मनाजं

दत्तं आय दत्तं दत्तं
महिषवनगर्तनी
लजी मूगवर्षा
जीवना क्वा मयि उर
पुगवरुल विष्णु
जागनू क्वा क्वा
वन्दे हं दूतवृन्दे उय
निवृत्तमं निष्ठा ददि
धियं निष्ठा ॥
अग्रगं क्वा दि ॥

वि स्था वि
 वि प न न
 हृ प ष न न
 उ हृ ष प ष
 पृ म हृ पृ
 स म सि म
 ज हृ उ उ
 ष हृ हृ उ
 पू क क हृ
 आ क ष हृ
 म व वा क
 ना अ व वि
 कु न हृ उ
 हृ सि स स
 न न न न

[illegible]

न॥ गावयद मि
माग्नयां या लुल्ल
ल्लिं गु क द्यु ति।
सिग भ कि धे र्दी
फे मृग कि गम
हा रु उ॥ अ ओ य नि
सुखा सी न स्वा रु या
स रु म ड्ढ न॥ व द न म
व दे वा नां दि व्य न
त्र कि नी टि नं ध्यान
॥

ॐ नृं अग्र य भ कि रु
स्मा य स्व भ कि स हि
ता य न म॥ अ प सु ति
॥ ॐ अग्र य न म॥ ॐ
गु उं यू उं दं ला
रं नि उ र व न वि भि
स्वा। ध रु वि भ्व न्य
को न॥ जि द्वा रि ४
स फ रि ध्व य सु ग
दू ग रु उं स व दे व
स्य रु न॥ भ किं सु

ग्द को रु सै धृतय
 न गुरु वया स्वा रु या
 लि क स वा ध्या य
 दि वा म्ब ना रु गि
 च न ल ल नि त पि
 म लो (ग) र्द क म् ॥

नै अ थ भव ॐ रु म
 कूर ॐ रु नि सु ॐ
 रु सै नि धि कूर स्वा
 लो ध्या न ॥ नी लो त्र
 ल्यै ल द ल म् म
 ना क सै

नै सु गी कू ख र्म वि
 मा लं वि क ठान न म
 तु लं ॥ वा मा ल कू न
 वा मा कें म वा रु म
 न वि गृ हं ॥ ध्या य दि
 वि गृ ह वा रु नै अ
 र्था ना क स भव नं ॥
 ध्या न पू र्थ न म ॥
 गि या ऊ र वि ॥
 ई र्क नै अ र्था य र व
 रु रु ता य म वि
 म दि न

15

0

5

0

centimeter 5

10

15

20

जायते ॥
 ईने अत्यन्त ॥
 यथा ४ का अत्र सन्
 विष्णु तस्य मला।
 प्रमती अधिचूट
 डिक्काली छिन्नक
 कठिन कनक लया
 लभ्यते मूल
 मेघस्थ भात
 लभ्यते नूत
 मन्त्र गुणव
 त्यक्तु मूल

[illegible]

श्री

ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ततः प्रवृत्तं नमः ॥ अथादिप
 नमः ॥ नमः ॥ तुलापूजार्थं ॥ तुलापूजार्थं ॥ तुलापूजार्थं ॥ तुलापूजार्थं ॥
 द्वावर्षादिभिर्गन्धैः ॥ द्वावर्षादिभिर्गन्धैः ॥ द्वावर्षादिभिर्गन्धैः ॥ द्वावर्षादिभिर्गन्धैः ॥
 ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

वागपूषादिकीदृशा ॥ ॐ स्वस्ति नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥
 ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 ॥ नमः ॥ ॥ नमः ॥ ॥ नमः ॥ ॥ नमः ॥ ॥ नमः ॥ ॥ नमः ॥ ॥ नमः ॥ ॥ नमः ॥
 काश्या ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥

ॐ ह्रीं विष्णवे ॥ ॐ नमः १० रूवाय ॥ ॐ विष्णवे लाटसयि
ॐ यमनदले ॥ ॐ अरुण ॥ ॐ अस्मिन् स्थिते ॥ ॐ
विष्णवे नमः ॥ ॐ ॐ ॐ विष्णवे ॥ ॐ यागं नमः ॥ ॐ नमः ॥
गणेशाय ॥ ॐ विरुता ये याल्के से व ॥ ॐ ययि नव्य
को ने तुला ये वा मिर्दं पञ्च ॥ दोषा यन्मा विनेति ॥ ॐ
ह्या रुगे शुभं सि धमले शुभे जागन व म रुष्ये ॥

सप १

नमो यजु नवादिने वृद्धा मृप ग लु ० य ० मना
ययु विदु ॥ ॐ ब्रह्माणी मम गय ॥ तमो दयद यदुः
ऊर्णे ॥ अर्थ यो य क्लेश द को य पुत्र ग यो नथा क ऊ
ये ग ले न ॥ ॐ धय ॥ ॐ दिने नव्य ॥ ॐ वन न य
ॐ ॥ ॐ सा मा य न ॥ ॐ दिने नव्य ॥ ॐ वन ॥ ॐ वन ॥
स्त्री ला दि ॥ ॐ यदी पने य य पु मि ज्ञाने जा प ला

वृक्षम्या ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय यथादि नमः क्रियते
वृक्षम्या ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय यथादि नमः क्रियते
वृक्षम्या ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय यथादि नमः क्रियते
वृक्षम्या ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय यथादि नमः क्रियते
वृक्षम्या ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय यथादि नमः क्रियते

क्रियते ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय यथादि नमः क्रियते
वृक्षम्या ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय यथादि नमः क्रियते
वृक्षम्या ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय यथादि नमः क्रियते
वृक्षम्या ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय यथादि नमः क्रियते
वृक्षम्या ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय यथादि नमः क्रियते

भादवि त्वयितस्मान्नमानसः॥ नमानससि (भावि
दुता पृष मेरु क । त्वं दप्रता न यस्मान्नतस्मा
स्मान्नसागना ॥ ॐ गियठि त्वा उधा पलि गृही
त कृ सुसो जलिति दिये ॥ ततो अत्रा दन मे क
ली कृ यो ॥ त यध ॥ अद्यादि ॥ यध गाय यध
नाम अस्मा उत्यु न सी ता इति गो यम न दी यो
यत्न वल पृष्ठि कोऽयं या ॥ ॐ दी दु मं वा यद्वर्गा

तुता पृष मदे सा नाद य ॥ पुन ४ तुली त्रि युद कि
ली कृ द्दु द्दी रु न स प न्न ४ वा म सु छि ना ग दी त
ध म नो ज ४ द कि ॥ म छि ना ग दी त सृ य ४ उ ली ग
स्मापित स्त ४ द व ता ४ य म सु र व ४ तु ला यो उ रु न रु न
क अत्रा द मे गो न गो इ प पु द कि न रु ल क अत्रा वा
र्यो रु ता दि द अ मा ना प य ॥ तु ला म अ व ली वि
त (भा वि द व अ नू (भा दा दी या व ॥ छि वा य ० ॥

नमस्तु सर्वलक्षणं साक्षि रूपं नातनि । पितामह
नक्षत्रं निर्मिताप न भक्षिना ॥ त्वया धर्मादिगत्
किसु सुखावर्जं गमी सर्वरुणात्मरुगमिनस
क्षु सुने अनित्यं ॥ अणिपठित्वा तुला ॥
को ७ अवेगी यो तुला दुवा सुर्क मी कल्या य ७ ॥
मयध ॥ आ अखरु वदि पणि माइ ये विध्य ॥ वाप्र
अय कथं यं दारु ॥ ७ ॥ तुत तुला पुत्रु सदन

ददानि ॥ दद खणिय निर्व वन ॥ ॥ अग्नावासाय क
स्य अदनादि ॥ अथ ॥ १४ यथा ना मग म्मिदित्येन
यो आइ निगोपना मन दीया यू त्व वलु म्मिदिका म
नयो ७ ॥ दसु धिने अखरु रुवा य दितं तुला
पुत्रु स मी रुक मी य प व्या य द्विर्नि अ म्म क गमा य
अ म्म क वेदा अगिर्न अ म्म क ना मग म्मिदिका
अय तुला मर्द स एव द ॥ अय एति ७ ॥ तुला क ७ ॥
अ ॥

स्वस्तीति॥ कोदा० प० नीर्य॥ कृते गुरु उल्लापुत्
ब्रह्म न सांगता सुखार्थं हि रक्ष्य स मिद वती दक्षि
र्षि उल्लापुत् सर्वं पुन दद॥ अग्रीवी देव दु०॥ तमाय
ऊसाता को यो यो तु लायता नादि व स्र्मना ज सु र्य
ऽस्य पि दयु गि मासि यत्किं विदक्षि र्षि द वृष्टि न
ऽस्य॥ तमा अवा योऽमृत्पुं जय कलशमदि नो विम
ऊर्न कलां मृत्पुं जय न सुख द के र्यो ज मावा

तिष्ठि वयं अग्रीवी दे॥ सु र्य र्षि र्षि क्रि॥ न्याय॥
ॐ ह्रीं उ० उ० उ० लापुत् नृष दान विविधि॥ र्षि क्रय॥ ०॥

उत्सर्गं स्मयि तत्त्व क देवत

नमो ब्रह्म न्य देवाय गमवा क्कन लिताय व
जगत्पुताय कृष्णाय गम विन्याय नमो नम॥

सतस्यदिकामघाय॥ प्रिणव
 वलु॥ यानू वि (मन द
 मिच कि सि मधलरु न स्व
 गायरु नरु (मय गे वा
 अकन ॥ ॥ युतिमा चउ४
 समन सवमिले पनयाकव
 सादुदु लामन नया व
 युतिमा थुका वन
 सीपुलु नातिथुतिरु धं
 द्या विवि

10

15

20

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो

॥ गौरी गङ्गा ॥
॥ श्री गङ्गा ॥
॥ श्री गङ्गा ॥
॥ श्री गङ्गा ॥

This image shows a vertical strip of aged, textured paper, possibly an endpaper or flyleaf from an old book. The paper has a mottled, yellowish-brown color with visible fibers and some darker staining. A prominent white, irregular tear or hole is located near the top center. There are also several smaller, dark spots and a few tiny white specks scattered across the surface. The texture appears rough and weathered.